महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

फोन नं0 : 0551–6827552

मो. 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक : ....

दिनांक : 02.02.2016

प्रकाशनार्थ

योग स्वयं को पहचानने का सबसे महत्वपूर्ण मार्ग है, यह विवेक को जागृत करता है जो व्यक्ति को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। भारत की आध्यात्मिक चिंतन परम्परा आने वाले चुनौतियों का समाधान करने में सक्षम है। भारतीय आध्यात्मिक चिंतन मानव कल्याण मानव प्रेम पर आधारित है। यह मनुष्य के अन्दर करूणा, सद्भाव और परोपकार का भाव पैदा करती है। आन्तरिक और बौद्धिक उन्नति का मार्ग आध्यात्मिक चिंतन में समाहित है। आज के भौतिकवादी और बाजारवादी व्यवस्था में व्यक्ति के जीवन में विभिन्न प्रकार के विकार उत्पन्न किये हैं। मानसिक स्तर से लेकर शारीरिक स्तर तक व्यक्ति संकटों और चुनौतियों से जुझ रहा है। इसके कारण सामाजिक सामाजिक विकृति का अत्यधिक विस्तार हुआ है। मनुष्य में धैर्य, सहनशीलता में अत्यधिक कमी आयी है। आज इन समस्याओं से पूरा विश्व जूझ रहा है। विशेष रूप से दुनिया के विकसित देश में मानवता ही संकट में पड़ती जा रही है। ऐसे में भारतीय आध्यात्मिक चिन्तन पद्धति मनुष्य में आन्तरिक रूप से मानवता का भाव पैदा करने में समक्ष है। उक्त बातें महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना के गुरू श्रीगोरक्षनाथ एवं हिन्दुआ सूर्य महाराणा प्रताप इकाई के संयुक्त सप्त दिवसीय विशेष शिविर के दूसरे दिन बौद्धिक सत्र में व्याख्यान देते हुए भटवली महाविद्यालय भटवली, उनवल बाजार, गोरखपुर के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. बलवान सिंह ने कही।

उन्होंने कहा कि पृथ्वी पर मनुष्य की उत्पत्ति ही सृष्टि की सबसे बड़ी देन है। इसे बचाये और बनाये रखने के लिए भारत की आध्यात्मिक ज्ञान परम्परा और योग साधना ही संजीवनी है। आध्यात्म मन के अन्दर के ज्ञान को निखारता है और व्यक्ति के स्वभाव को सरल और व्यापक बनाता है। एकाग्रता की सबसे बड़ी शक्ति ध्यान और योग है। आज के भागा–भागी युग में योग ही व्यक्ति संतोष पैदा करने का सशक्त साधन है।

इस कार्यक्रम में ध्यान और योग का अभ्यास डॉ. बलवान सिंह ने स्वयं सेवक/सेविकाओं को करवाया और यह संदेश दिया कि प्रत्येक व्यक्ति को ध्यान और योग का अभ्यास अपने दिनचर्या में अवश्य करना चाहिए। यह मानसिक और भौतिक दोनों दृष्टि से व्यक्ति को महान और चुनौतियों से लड़ने का सामर्थ्य पैदा करता है।

इस अवसर पर कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, डॉ. यशवन्त कुमार राव, डॉ. मृत्युंजय कुमार सिंह, सुश्री दीप्ति गुप्ता सहित स्वयं सेवक/सेविकाएं उपस्थित रहें। कार्यक्रम का संचालन आशीष राय ने किया।

(डॉ. प्रकाश प्रियदर्शी)

प्रभारी, सूचना एवं परामर्श